# शनि प्रदोष व्रत कथा

शनि प्रदोष व्रत कथा के अनुसार प्राचीन समय में एक नगर में एक व्यापारी था। सेठजी के घर में सभी प्रकार की सुख-सुविधाएं थीं, लेकिन संतान न होने के कारण सेठजी और सेठानी हमेशा दुखी रहते थे। काफी सोच-विचार के बाद सेठजी ने अपना काम नौकरों को सौंप दिया और स्वयं सेठानी के साथ तीर्थ यात्रा पर निकल पड़े।

अपने नगर से बाहर निकलने पर उनकी मुलाकात एक साधु से हुई, जो ध्यान में बैठे थे। सेठजी ने सोचा, क्यों न साधु से आशीर्वाद लेकर यात्रा पर आगे बढ़ा जाए। सेठजी और सेठानी साधु के पास बैठ गए। जब साधु ने आंखें खोलीं तो उन्हें पता चला कि सेठ और सेठानी काफी देर से आशीर्वाद की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

साधु ने सेठ और सेठानी से कहा कि मैं तुम्हारा दुख जानता हूं। तुम्हें शनि प्रदोष व्रत करना चाहिए, इससे तुम्हें संतान सुख की प्राप्ति होगी। साधु ने सेठ-सेठानी को प्रदोष व्रत की विधि भी बताई और भगवान शंकर से निम्न प्रार्थना भी कही।

दोनों ने साधु से आशीर्वाद लिया और तीर्थ यात्रा के लिए आगे बढ़ गए। तीर्थ यात्रा से लौटने के बाद व्यापारी और उसकी पत्नी ने मिलकर शनि प्रदोष व्रत किया, जिसके प्रभाव से उनके घर एक सुंदर पुत्र का जन्म हुआ और उनका जीवन खुशियों से भर गया।

pdfinbox.com